



SHRI PATAET KUMAR SAHU

Shri Pataet Kumar Sahu is a traditional herbalist (Vaidya). He is widely recognised across the Western Odisha for his role in popularising herbal medicines and planting herbal plants.

2. Born on 18th August 1955 in a middle-class farmer's family in the village Nandol in Kalahandi District in Odisha, Shri Sahu could complete his education upto 11th class due to financial problems.

3. Being highly inspired by his grandfather Shri Gobarddhan Sahu, a traditional healer, a love for herbal plants aroused in his tender mind from his childhood. It led him to have irresistible passion for creating a herbal garden on 1.5 acres of his own land consisting of about 3200 rare varieties of herbal plants. This herbal garden is a centre of attraction for the Botany students of many colleges for their practical classes and exposure visit. An Ayurvedic library has also been created by Shri Sahu consisting of 921 valuable books. This library is open to all and regular discussions on Ayurveda are held every day. He also writes on herbal plants and medicine and these writings have been published in Health Magazines.

4. Under the active guidance of Shri Sahu some institutions have been set up for the popularisation of herbal medicine and plantation of herbal plants in many places. Susruta Baidya Sangh was set up in the village Chhatikuda in the year 1999 which consisted of 132 traditional healers from different parts of the district. In 2000, Aswini Kumar Kalahandi Baidya Sangh was set up under his guidance. He has also adopted Phup Jhudi Primary school and formed a Green Health Troop in the school and planted 200 varieties of herbal plants on the school campus. He himself teaches the students on the usefulness of plants.

5. Shri Sahu was an active member of a survey team which discovered 350 herbal plants of rare varieties in the Ghana Forest. He has made documentation of so many medicinal plants with photos in three big registers for the easy identification for the later generation. This has attracted the kind attention of our Hon'ble Prime Minister in the popular programme Maan Ki Baat on 26th September, 2021.

6. Shri Sahu is the recipient of several awards and honours. He was conferred "Prakruti Bandhu" for the year 2009-2010 by Forest and Environment Department, Government of Odisha. He was awarded with the title "Banausadhi Prabeen" in 2007 by Mutyunjaya Vaidya Sangh, Dangarmurli and "Ayurveda Siromani" in 2011 by Ashwini Kumar Kalahandi Vaidya Sangh, Kalahandi. He was also honoured with the title of "Dhanwantari" in 2021 by Arogya Bharati Bhopal, Western Odisha Branch.



श्री पटाएत कुमार साहू

श्री पटाएत कुमार साहू एक पारंपरिक हर्बलिस्ट (वैद्य) हैं। हर्बल दवाओं को लोकप्रिय बनाने और हर्बल पौधे लगाने में उनकी भूमिका के लिए पश्चिमी ओडिशा में उनकी व्यापक पहचान है।

2. 18 अगस्त 1955 को ओडिशा के कालाहांडी जिले के नांदोल गांव में एक मध्यमवर्गीय किसान परिवार में जन्मे, श्री साहू आर्थिक तंगी के कारण 11वीं तक ही पढ़ाई ही कर पाए।

3. श्री साहू के दादा, श्री गोबर्धन साहू एक पारंपरिक उपचारक थे जिनसे प्रेरित होकर बचपन में ही उनके कोमल मन में हर्बल पौधों के प्रति प्रेम जागृत हो गया था। इसने उनके अंदर अपनी खुद की 1.5 एकड़ भूमि पर लगभग 3200 दुर्लभ किस्म के पौधे वाला एक हर्बल उद्यान बनाने का प्रबल उत्साह पैदा किया। यह हर्बल उद्यान कई कॉलेजों के वनस्पति विज्ञान के छात्रों के लिए उनकी प्रायोगिक कक्षाओं और परिचय यात्रा के लिए आकर्षण का केंद्र है। श्री साहू ने एक आयुर्वेदिक पुस्तकालय भी बनाया है जिसमें 921 बहुमूल्य पुस्तक हैं। यह पुस्तकालय सभी के लिए खुला है और इसमें प्रतिदिन आयुर्वेद पर चर्चा होती है। वह हर्बल पौधों और औषधियों पर भी लिखते हैं और ये लेख स्वास्थ्य पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

4. श्री साहू के सक्रिय मार्गदर्शन में अनेक स्थानों पर हर्बल औषधि को लोकप्रिय बनाने तथा हर्बल पौधों के रोपण के लिए कुछ संस्थाओं की स्थापना की गई है। वर्ष 1999 में छटीकुड़ा गाँव में सुश्रुत वैद्य संघ की स्थापना की गई जिसमें जिले के अलग-अलग हिस्सों के 132 पारंपरिक चिकित्सक शामिल थे। 2000 में, उनके मार्गदर्शन में अश्विनी कुमार कालाहांडी वैद्य संघ की स्थापना की गई। उन्होंने फुप झूड़ी प्राथमिक विद्यालय को गोद लिया है और स्कूल में एक ग्रीन हेल्थ ट्रूप का गठन करते हुए स्कूल परिसर में 200 किस्मों के हर्बल पौधे लगाए। वह खुद छात्रों को पौधों की उपयोगिता के बारे में पढ़ाते हैं।

5. श्री साहू घाना के जंगलों में दुर्लभ किस्मों के 350 हर्बल पौधों की खोज करने वाले सर्वेक्षण दल के सक्रिय सदस्य थे। उन्होंने आने वाली पीढ़ी के लिए आसान पहचान हेतु तीन बड़े रजिस्ट्रों में बहुत से औषधीय पौधों का फोटो सहित दस्तावेजीकरण किया है। इसने 26 सितंबर 2021 को लोकप्रिय कार्यक्रम मन की बात में हमारे माननीय प्रधान मंत्री का ध्यान आकर्षित किया।

6. श्री साहू को कई पुरस्कार और सम्मान मिल चुके हैं। उन्हें वन और पर्यावरण विभाग, ओडिशा सरकार द्वारा वर्ष 2009-2010 के लिए "प्रकृति बंधु" से सम्मानित किया गया। उन्हें 2007 में मृत्युंजय वैद्य संघ, डांगरमुरली द्वारा "वनौषधि प्रवीण" और 2011 में अश्विनी कुमार कालाहांडी वैद्य संघ, कालाहांडी द्वारा "आयुर्वेद शिरोमणि" खिताब से सम्मानित किया गया था। आरोग्य भारती भोपाल, पश्चिमी ओडिशा शाखा द्वारा 2021 में उन्हें "धन्वंतरी" की उपाधि से भी सम्मानित किया गया।